

23. जैसी करनी, वैसी भरनी

एक बार की बात है—

बहुत समय तक वर्षा न होने के कारण सारे देश में अकाल पड़ने लगा। चारों ओर हा-हा कार मचने लगा। सारे पशु-पक्षी भोजन के लिए तरसने लगे और इधर-इधर भटकने लगे। भूख ने हर प्राणी को पागल बना दिया था। उन्हें भोजन के अलावा कुछ भी नहीं सूझता था।

अतः चिड़ियों का एक झुंड भूख से व्याकुल होकर भोजन की तलाश में हिमालय की ओर उड़ पड़ा, उन्होंने सोचा कि वहां तो अवश्य ही उन्हें कुछ-न-कुछ मिल ही जायेगा, क्योंकि वहां सूखा नहीं पड़ता। इसी आशा से वे इस ओर उड़ने लगे।

उड़ते-उड़ते वे पक्षी एक पहाड़ की चोटी में बैठ गए, किन्तु उन्हें वहां भी खाने को कुछ विशेष नहीं मिला।

उनके दल में एक चिड़िया बहुत चालाक थी। वह चुपचाप बिना किसी को बताये अकेली ही जंगल की ओर उड़ने लगी। जंगल के बीच से एक सड़क शहर की ओर जाती थी। वह उस सड़क को बड़े ध्यान से देखने लगी। तभी चिड़िया ने देखा कि उस सड़क पर बैलगाड़ियां चली आ रही हैं। उनमें अनाज भरा हुआ है। अनाज ज्यादा होने के कारण सड़क पर गिर रहा है। यह सब देख वह नहीं चिड़िया मन-ही-मन बहुत खुश हुई और सोचने लगी चिन्ता की कोई बात नहीं अब तो काम बन गया। हम तो एक-एक दाने के लिए तरस रहे थे और यहां तो अनाज का ढेर लगा गया है, वह भी खुली सड़क पर।

वह चिड़िया स्वार्थी तो थी ही। अतः मन-ही-मन सोचने लगी—इस अनाज को मैंने ढूंढा है और सभी तो बैठे हुए हैं। मैं मेहनत करूँ और वे बैठे-बैठे इसे खा जाएं, ऐसा कैसे हो सकता है ? इसलिए इस पर मेरा ही अधिकार है। किसी को कुछ नहीं बताऊँगी मरते हैं तो मरें। किसी को एक दाना नहीं लेने दूँगी। सारा-का-सारा इकट्ठा कर लूँगी। इसकी किसी को कानों-कान खबर नहीं लगने दूँगी। ऐसा निश्चय करके चिड़िया वापस अपने साथियों के पास पहुँची। रात अधिक हो गयी थी, पर सबके-सब उसी की प्रतीक्षा में बैठे थे।

एक सयानी चिड़िया ने उससे पूछा—“अरी बहन हम तो तुझे खोजते-खोजते थक गए, तू अकेली कहां चली गई थी ?”

इस पर चिड़िया ने उसको टालने के लिए कह दिया—“अरे कहीं भी तो नहीं बस, जरा यूँ ही घूमने चली गई थी।”

दूसरी चिड़िया ने भांप लिया कि वह सच नहीं बोल रही है, इसलिए उसने कहा—“कहीं तुम झूठ तो नहीं कर रही हो, बहन हमें तो लगता है कि तू हमसे जरूर कुछ छिपा रही हो।”

यह सुनकर चिड़िया घबराई, पर जल्दी ही संभलकर उत्तर दिया—“बहन मैं झूठ क्यों बोलने लगी, तुम मेरा विश्वास करो, मैं भला तुमसे क्यों छिपाने लगी।”

दूसरी चिड़िया कहने लगी-“तुम सच-सच बताओ कि तू हमसे अलग होकर अकेली क्यों गई ? कोई-न-कोई कारण तो अवश्य है।”

चिड़िया ने समझ लिया कि अब ये बिना बताए पीछा नहीं छोड़ेंगी। इसलिए उसने बहाना बना दिया-“बहन तुम तो मेरे पीछे ही पड़ गयी हो, अगर सुनना चाहती हो तो सुनो, “मैं सामने के ही जंगल में उस सड़क पर कुछ खाने की तलाश में निकल गई थी।”

दूसरी चिड़िया ने उत्सुकतावश पूछा-“बड़ी अच्छी बात है। तुमने ठीक किया बहन। तो तुम्हें कुछ मिला ?”

चालाक चिड़िया एकदम झूठ बोल गयी-“मिला तो अवश्य, लेकिन खाने की हिम्मत नहीं पड़ी।”

दूसरी चिड़िया ने निराश होकर पूछा-“मिला, परन्तु खाने की हिम्मत नहीं पड़ी। ऐसा क्यों ? पूरी बात तो बताओ।”

नन्ही चिड़िया ने कहा-“बात यह है कि जंगल में बहुत सारे शिकारी आये हैं, उनके साथ कुत्ते, बाज आदि पशु-पक्षी भी हैं इसलिए वह अनाज उन्हें मिल रहा है।”

यह सुनकर सभी चिड़ियां निराश हो गयीं। भूख के कारण सबका बुरा हाल था। किन्तु वह चिड़िया मन-ही-मन बहुत खुश हुई, क्योंकि सबने उसकी बात पर विश्वास कर लिया था।

वह मन-ही-मन कहने लगी-“चलो इनसे पल्ला तो छूटा। अच्छा ही हुआ, मेरा तीर ठीक निशाने पर बैठा। अब तो ये सभी चिड़ियां डर गई हैं। इसलिए जंगल की ओर कोई भी नहीं जाएगी। इसमे मेरा काम आसान हो गया। कल से मैं सवेरे ही उठकर गाड़ियों से गिरे अनाज को उठाकर जमा कर लूंगी। वर्षा के मौसम में जब सब लोग दाने-दाने के लिए तरसेंगे, उस समय मैं आराम से बैठकर खाया करूंगी।”

लालच ने उसे बड़ा ही स्वार्थी बना दिया, वह अपनी बिरादरी से अलग हटकर अकेली ही अनाज एकत्रित करने लगी।

जैसे ही अनाज से भरी बैलगाड़ियाँ आतीं वह चिड़िया तेजी से उड़ कर बोरी में सुराख कर देती जिससे उस सुराख से अनाज गिरता जाता था और वह दाना-दाना अपनी चोंच में भर लेती, फिर उसे पास में ही जमा करती जाती थी।

उस लालच बढ़ता जा रहा था इसलिए उसकी सोचने विचारने की शक्ति नष्ट होती जा रही थी और उसकी बुद्धि काम नहीं कर रही थी।

वह सड़क पर पड़े दानों को उठाने में इतनी अधिक तल्लीन थी कि यह भी भूल गयी थी कि पीछे से भी बैलगाड़ियां आ रही हैं वह उसके नीचे आकर दब सकती थी। उसे यह सब सोचने की फुरसत की कहां थी ?

चिड़िया ने यह भी नहीं सोचा कि अनाज तो फिर भी मिल सकता है, लेकिन जीवन तो दुबारा नहीं मिलता है। उसे अन्न के दाने उठाने के सिवा कुछ ध्यान ही नहीं था। वह अनाज

के दानों को उठाती जा रही थी और कल्पना भी करती जा रही थी कि अधिक-से-अधिक दाने जमा करके वह सभी चिड़ियों से अधिक अन्न वाली हो जाएगी। तब सभी उसका आदर करेंगे और सभी उसकी आज्ञा भी मानने लगेंगे। कल्पना में खोई वह अनाज इकट्ठा करती जा रही थी। उसे मालूम ही नहीं चला कि कब पीछे से दूसरी बैलगाड़ी आ गयी। उका पूरा ध्यान सड़क पर पड़े अनाज के दानों पर था। बैलगाड़ी उसके सिर पर आ गयी फिर भी वह दाने उठाती रही।

तभी जब तक वह कुछ सोचती, बैलगाड़ी उसके ऊपर से गुजर गई और वह पहिये से कुचलकर मर गयी।

इस प्रकार उसने अनाज के कुछ दानों के लालच में पड़कर अपने प्राण त्याग दिये।

उधर अन्य चिड़ियों ने जब उस चिड़िया को नहीं पाया, तो उन्हें चिंता हुई और वे अपनी राजा के पास पहुंची और राजा को बताया- “हम सब घर से एक साथ यहां आये थे किन्तु और तो सब ठीक है, सब सकुशल है, पर हमसे से एक चिड़िया कल से गायब है।”

यह सुनकर राजा को चिन्ता हुई और उसने अपनी प्रजा से कहा- “यह तो बहुत बुरा हुआ, हम-सब मिलकर उसका पता लगाते हैं। कहीं उसके साथ कोई दुर्घटना तो नहीं हो गयी।” ऐसा कहकर सबके सब उड़ते हुए जंगल की उस सड़क पर पहुँच गये, जहां चिड़िया मरी थी। अचानक राजा की दृष्टि नीचे सड़क पर चिड़िया की लाश पर पड़ी। उसने दुःखी होकर सबको बताया- “देखो, उसकी लाश पड़ी है।”

सबके मुँह से दुःख भरी आह निकली-“हाय-हाय, यह तो बहुत बुरा हुआ।”

वे सोचने लगे कि यह चिड़िया तो सबसे कहती थी कि उधर मत जाना और स्वयं इधर आती थी।

राजा ने आह भरकर कहा- “झूठे और लालची व्यक्तियों के साथ सदा ही ऐसा होता है। इसने अपने ही साथियों को धोखा दिया था। धोखा देना बहुत बुरा है। इसका परिणाम आप सबके सामने है। इसलिए हमें भी इस चिड़िया की मृत्यु से कुछ सीखना चाहिए कि झूठ, लालच और धोखे से हमेशा दूर रहना चाहिए, क्योंकि इसका परिणाम हमेशा ही दुःखदायी होता है। अतः आप सभी लोग इस घटना से शिक्षा लें और बुराइयों से सदा दूर रहें, यही सुखी रहने का राज है।”

* अभ्यास *

1. चालाक चिड़िया ने सड़क पर क्या देखा ?
2. इस पाठ के आधार पर स्पष्ट करो लालच का क्या परिणाम होता है ?
3. “जैसी करनी वैसी भरनी” नामक कथा से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

